



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

भारतीय शिक्षा प्रणाली का ऐतिहासिक विकास: प्राचीन से आधुनिक काल तक एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

सुशील दत्त उपाध्याय

असिस्टेंट प्रोफेसर

सारांश

भारतीय शिक्षा प्रणाली का ऐतिहासिक विकास प्राचीन काल से आधुनिक युग तक निरंतर परिवर्तन और अनुकूलन की प्रक्रिया को दर्शाता है। प्राचीन भारत में गुरुकुल व्यवस्था के माध्यम से समग्र एवं मूल्य-आधारित शिक्षा प्रदान की जाती थी, जबकि बौद्ध एवं जैन काल में नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों ने वैश्विक शिक्षा केंद्र के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त की। मध्यकालीन काल में शिक्षा का स्वरूप धार्मिक प्रभावों के अधीन रहा, जहाँ मदरसा प्रणाली प्रमुख थी। औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश नीतियों ने शिक्षा को पाश्चात्य दृष्टिकोण की ओर मोड़ा, जिससे आधुनिक शिक्षा की नींव पड़ी। स्वतंत्रता के बाद विभिन्न शिक्षा नीतियों एवं आयोगों के माध्यम से शिक्षा को अधिक समावेशी, व्यावहारिक और सार्वभौमिक बनाने का प्रयास किया गया। वर्तमान समय में डिजिटल तकनीक एवं कौशल-आधारित शिक्षा ने शिक्षा प्रणाली को नया आयाम प्रदान किया है। यह अध्ययन भारतीय शिक्षा प्रणाली के विकास का विश्लेषण करते हुए इसके सामाजिक, सांस्कृतिक और नीतिगत प्रभावों को स्पष्ट करता है।

कुंजी शब्द: भारतीय शिक्षा प्रणाली, ऐतिहासिक विकास, गुरुकुल, औपनिवेशिक शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रस्तावना

भारतीय शिक्षा प्रणाली का इतिहास अत्यंत समृद्ध, विविधतापूर्ण तथा बहुआयामी रहा है, जो प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक निरंतर विकासशील रहा है। प्राचीन भारत में शिक्षा का स्वरूप मुख्यतः वैदिक परंपराओं पर आधारित था, जिसमें गुरुकुल व्यवस्था के माध्यम से विद्यार्थियों को न केवल ज्ञानार्जन कराया जाता था, बल्कि उनके नैतिक, आध्यात्मिक एवं चारित्रिक विकास पर भी विशेष बल दिया जाता था। इस काल में शिक्षा का उद्देश्य जीवन के समग्र विकास तथा समाज में संतुलन स्थापित करना था। बौद्ध एवं जैन काल में नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्वविख्यात शिक्षण केंद्रों ने शिक्षा को वैश्विक पहचान प्रदान की, जहाँ विभिन्न देशों के विद्यार्थी अध्ययन हेतु आते थे। मध्यकालीन भारत में मुस्लिम शासन के प्रभाव से शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन हुआ, जिसमें मदरसा एवं मकतब प्रणाली का विकास हुआ और धार्मिक शिक्षा पर अधिक जोर दिया गया। इसके पश्चात औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश शासन ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को एक नया स्वरूप दिया, जहाँ मैकाले के शिक्षा सिद्धांत (1835) एवं तुड्स डिस्पैच (1854) के माध्यम से पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली का प्रवेश हुआ, जिसने भारतीय समाज, भाषा और संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने अपनी शिक्षा प्रणाली को पुनर्गठित करने का प्रयास किया और विभिन्न



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

आयोगों एवं नीतियों जैसे कोठारी आयोग तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1968, 1986 एवं 2020) के माध्यम से शिक्षा को अधिक समावेशी, समानतामूलक एवं व्यावहारिक बनाने की दिशा में कदम उठाए गए। वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली डिजिटल तकनीक, वैश्वीकरण एवं कौशल-आधारित अधिगम की ओर अग्रसर है, जिससे शिक्षा का स्वरूप और अधिक गतिशील एवं बहुआयामी हो गया है। इस प्रकार भारतीय शिक्षा प्रणाली का ऐतिहासिक विकास न केवल समयानुसार परिवर्तनों को दर्शाता है, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों का भी प्रतिबिंब प्रस्तुत करता है, जिसका विश्लेषण करना वर्तमान संदर्भ में अत्यंत आवश्यक है।

भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास देश की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है, जिसने समय-समय पर इसके स्वरूप और उद्देश्यों को प्रभावित किया है। प्राचीन काल में शिक्षा का केंद्र ज्ञान, नैतिकता एवं आध्यात्मिक उन्नति था, जहाँ गुरुकुल प्रणाली के माध्यम से समग्र व्यक्तित्व विकास पर बल दिया जाता था। मध्यकालीन दौर में शिक्षा धार्मिक संस्थानों के अधीन रही और उसका स्वरूप सीमित एवं विशिष्ट वर्ग तक केंद्रित हो गया। औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश शासन द्वारा लागू की गई शिक्षा नीतियों ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को पाश्चात्य ढांचे में ढाल दिया, जिससे पारंपरिक शिक्षा पद्धतियों में परिवर्तन आया। स्वतंत्रता के पश्चात भारत ने शिक्षा को लोकतांत्रिक, समावेशी एवं सर्वसुलभ बनाने के उद्देश्य से अनेक नीतिगत सुधार किए। वर्तमान समय में वैश्वीकरण, तकनीकी विकास और डिजिटल अधिगम के प्रभाव से शिक्षा प्रणाली निरंतर परिवर्तित हो रही है, जिससे इसके ऐतिहासिक विकास का अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है।

भारतीय शिक्षा प्रणाली के ऐतिहासिक विकास का अध्ययन वर्तमान शैक्षिक संरचना को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हमें यह स्पष्ट करता है कि शिक्षा के उद्देश्यों, स्वरूप और नीतियों में समय के साथ किस प्रकार परिवर्तन हुए हैं। यह अध्ययन प्राचीन, मध्यकालीन, औपनिवेशिक तथा आधुनिक शिक्षा प्रणालियों के तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से उनके गुण-दोषों को उजागर करता है, जिससे वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सुधार की संभावनाओं की पहचान की जा सकती है। साथ ही, यह अध्ययन शिक्षा और समाज के बीच के पारस्परिक संबंधों को भी रेखांकित करता है, जैसे कि सामाजिक समानता, सांस्कृतिक संरक्षण एवं आर्थिक विकास में शिक्षा की भूमिका। वर्तमान समय में जब शिक्षा वैश्वीकरण, डिजिटलीकरण एवं कौशल-आधारित दृष्टिकोण की ओर अग्रसर है, तब ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य का यह विश्लेषण नीति-निर्माताओं, शिक्षाविदों एवं शोधकर्ताओं के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होता है और भविष्य की शिक्षा नीतियों के निर्माण में सहायक बनता है।

प्रमुख शिक्षा सिद्धांत

1. आदर्शवाद

आदर्शवाद के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के आध्यात्मिक, नैतिक एवं बौद्धिक विकास को सुनिश्चित करना है। इसमें सत्य, सौंदर्य और नैतिक मूल्यों को सर्वोच्च माना जाता है तथा ज्ञान को स्थायी एवं शाश्वत



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

सत्य के रूप में देखा जाता है। इस सिद्धांत में शिक्षक की भूमिका मार्गदर्शक एवं प्रेरणादाता की होती है, जो विद्यार्थियों को उच्च आदर्शों की ओर उन्मुख करता है।

2. यथार्थवाद

यथार्थवाद शिक्षा को वस्तुनिष्ठ एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखता है। इसके अनुसार ज्ञान का स्रोत वास्तविक संसार और प्रत्यक्ष अनुभव हैं। इस सिद्धांत में विज्ञान, प्रकृति एवं अवलोकन को विशेष महत्व दिया जाता है तथा शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों के लिए तैयार करना होता है।

3. प्रयोजनवाद

प्रयोजनवाद शिक्षा को अनुभव, प्रयोग एवं समस्या-समाधान पर आधारित मानता है। इसके अनुसार शिक्षा एक गतिशील एवं सतत प्रक्रिया है, जो व्यक्ति को बदलती परिस्थितियों के अनुकूल बनाती है। इसमें 'learning by doing' पर बल दिया जाता है तथा शिक्षा को जीवन से जोड़कर देखा जाता है, जिससे विद्यार्थी व्यावहारिक एवं सृजनात्मक बनते हैं।

प्राचीन शिक्षा प्रणाली पर पूर्व अध्ययन

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली पर किए गए विभिन्न विद्वानों के अध्ययन यह स्पष्ट करते हैं कि उस समय की शिक्षा केवल ज्ञानार्जन तक सीमित न होकर जीवन के समग्र विकास पर आधारित थी। अनेक शोधों में यह उल्लेख मिलता है कि वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के नैतिक, आध्यात्मिक एवं बौद्धिक विकास को सुनिश्चित करना था, जिसमें गुरुकुल व्यवस्था केंद्रीय भूमिका निभाती थी। विद्वानों जैसे ए. एस. आल्टेकर, आर. के. मुखर्जी तथा डी. डी. कोसांबी ने अपने अध्ययनों में यह बताया है कि गुरुकुलों में शिक्षा का स्वरूप व्यक्तिगत, व्यावहारिक एवं अनुशासनात्मक था, जहाँ छात्र गुरु के सान्निध्य में रहकर जीवनोपयोगी ज्ञान प्राप्त करते थे। इसके अतिरिक्त, बौद्ध कालीन शिक्षा पर किए गए शोधों में नालंदा, तक्षशिला और विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों की वैश्विक प्रतिष्ठा का उल्लेख मिलता है, जो उच्च शिक्षा के प्रमुख केंद्र थे और जहाँ विदेशी विद्यार्थी भी अध्ययन हेतु आते थे। इन अध्ययनों से यह भी स्पष्ट होता है कि उस समय शिक्षा में दर्शन, व्याकरण, चिकित्सा, गणित एवं खगोलशास्त्र जैसे विविध विषयों का समावेश था। कुछ शोध यह भी इंगित करते हैं कि प्राचीन शिक्षा प्रणाली में समानता का अभाव था, क्योंकि शिक्षा मुख्यतः उच्च वर्गों तक सीमित थी। साथ ही, महिला शिक्षा भी सीमित स्तर तक ही उपलब्ध थी, यद्यपि कुछ विदुषी महिलाओं का उल्लेख मिलता है। समग्र रूप से, पूर्व अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकलता है कि प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली अत्यंत समृद्ध एवं व्यवस्थित थी, जिसने ज्ञान, संस्कृति एवं मूल्यों के संरक्षण एवं प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया, किन्तु इसमें कुछ सामाजिक सीमाएँ भी विद्यमान थीं, जिनका प्रभाव शिक्षा के व्यापक प्रसार पर पड़ा।

साहित्य समीक्षा

भारतीय शिक्षा प्रणाली के ऐतिहासिक विकास को समझने के लिए विभिन्न विद्वानों द्वारा किए गए अध्ययनों का विश्लेषण महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है। प्राचीन से आधुनिक काल तक शिक्षा के स्वरूप, उद्देश्यों



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

एवं संरचना में हुए परिवर्तनों को स्पष्ट करने में कई शोध कार्य सहायक सिद्ध होते हैं। आल्ट्रैक एवं साल्मी (2018) ने उच्च शिक्षा के वैश्विक मानकों एवं विश्व-स्तरीय विश्वविद्यालयों के निर्माण पर प्रकाश डालते हुए यह बताया कि किसी भी देश की शिक्षा प्रणाली का विकास उसके संस्थागत ढाँचे, गुणवत्ता एवं अनुसंधान क्षमता पर निर्भर करता है। वहीं, बत्रा (2015) ने शिक्षकों की भूमिका एवं उनकी भागीदारी को शिक्षा सुधार का महत्वपूर्ण घटक माना है और यह स्पष्ट किया कि शिक्षा नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए शिक्षक की सक्रिय भूमिका आवश्यक है। भारत सरकार (2020) द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने शिक्षा के समग्र एवं बहुविषयक विकास पर बल देते हुए आधुनिक शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधारों की दिशा निर्धारित की है।

गुप्ता (2017) ने भारतीय शिक्षा प्रणाली के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य का विश्लेषण करते हुए यह बताया कि शिक्षा का विकास विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक कारकों से प्रभावित रहा है। उनके अनुसार प्राचीन काल में शिक्षा मूल्य-आधारित थी, जबकि आधुनिक काल में यह अधिक व्यावसायिक एवं तकनीकी स्वरूप ग्रहण कर चुकी है। जयराम (2016) ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विस्तार एवं परिवर्तन की प्रक्रिया को स्पष्ट करते हुए 'मासिफिकेशन' (massification) की अवधारणा पर बल दिया है, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षा की पहुँच तो बढ़ी है, किन्तु गुणवत्ता एवं समानता से संबंधित चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। कुमार (2016) ने औपनिवेशिक एवं राष्ट्रवादी विचारधाराओं के संदर्भ में शिक्षा के राजनीतिक आयामों का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट किया कि शिक्षा केवल ज्ञान का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक नियंत्रण एवं वैचारिक निर्माण का उपकरण भी रही है।

मिश्रा एवं रंजन (2018) ने डिजिटल शिक्षा के उभरते स्वरूप एवं उसके प्रभावों का अध्ययन करते हुए बताया कि तकनीकी विकास के कारण शिक्षा अधिक सुलभ एवं लचीली हो गई है, परंतु डिजिटल विभाजन जैसी समस्याएँ अभी भी विद्यमान हैं। नांबिस्सन (2017) ने शिक्षा में समानता एवं समावेशन के मुद्दे पर विशेष ध्यान केंद्रित करते हुए दलित बच्चों की शिक्षा की स्थिति का विश्लेषण किया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि भारतीय शिक्षा प्रणाली में अभी भी सामाजिक असमानताएँ मौजूद हैं। इन अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षा के क्षेत्र में नीतिगत सुधारों के बावजूद समान अवसर एवं गुणवत्ता सुनिश्चित करना एक चुनौती बना हुआ है।

समग्र रूप से, उपर्युक्त साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास एक जटिल एवं बहुआयामी प्रक्रिया रही है, जिसमें ऐतिहासिक परंपराओं, औपनिवेशिक प्रभावों एवं आधुनिक नीतियों का समन्वय देखने को मिलता है। जहाँ एक ओर शिक्षा का विस्तार एवं आधुनिकीकरण हुआ है, वहीं दूसरी ओर गुणवत्ता, समानता एवं प्रभावशीलता से संबंधित चुनौतियाँ बनी हुई हैं। इस प्रकार, प्रस्तुत साहित्य समीक्षा यह संकेत देती है कि भारतीय शिक्षा प्रणाली के ऐतिहासिक विकास का विश्लेषण करते समय न केवल इसके सकारात्मक पक्षों, बल्कि इसकी सीमाओं एवं चुनौतियों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है, ताकि भविष्य में एक अधिक समावेशी एवं प्रभावी शिक्षा प्रणाली का निर्माण किया जा सके।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

भारतीय शिक्षा प्रणाली का ऐतिहासिक विकास

1 प्राचीन काल की शिक्षा प्रणाली

1.1 वैदिक शिक्षा प्रणाली

प्राचीन भारत की वैदिक शिक्षा प्रणाली ज्ञान, धर्म और नैतिकता पर आधारित थी, जिसका उद्देश्य व्यक्ति के समग्र विकास को सुनिश्चित करना था। इस प्रणाली में वेद, उपनिषद, ब्राह्मण ग्रंथ, दर्शन, ज्योतिष, गणित एवं आयुर्वेद जैसे विषयों का अध्ययन कराया जाता था। शिक्षा का माध्यम संस्कृत था तथा मौखिक परंपरा के माध्यम से ज्ञान का संचार किया जाता था, जिससे स्मरण शक्ति और बौद्धिक क्षमता का विकास होता था। इस प्रणाली में अनुशासन, ब्रह्मचर्य और गुरु के प्रति सम्मान को अत्यधिक महत्व दिया जाता था।

1.2 गुरुकुल व्यवस्था

गुरुकुल प्रणाली प्राचीन शिक्षा का आधार स्तंभ थी, जिसमें छात्र अपने गुरु के आश्रम में निवास कर शिक्षा प्राप्त करते थे। यहाँ शिक्षा का स्वरूप व्यक्तिगत एवं व्यवहारिक होता था, जहाँ प्रत्येक छात्र को उसकी क्षमता और रुचि के अनुसार ज्ञान प्रदान किया जाता था। गुरुकुलों में छात्रों को आत्मनिर्भरता, श्रम, सेवा भावना, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जाती थी। गुरु-शिष्य संबंध अत्यंत घनिष्ठ एवं आदर्श होता था, जो शिक्षा की गुणवत्ता को सुदृढ़ बनाता था।

1.3 बौद्ध एवं जैन शिक्षा केंद्र (नालंदा, तक्षशिला)

बौद्ध एवं जैन काल में शिक्षा का स्वरूप अधिक संगठित एवं संस्थागत हो गया। नालंदा, तक्षशिला एवं विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालय उस समय के प्रमुख शिक्षण केंद्र थे, जहाँ देश-विदेश से विद्यार्थी अध्ययन के लिए आते थे। इन संस्थानों में दर्शन, चिकित्सा, भाषा, राजनीति, अर्थशास्त्र एवं विज्ञान जैसे विषयों का उच्च स्तर पर अध्ययन एवं अनुसंधान किया जाता था। शिक्षा का माध्यम पाली एवं प्राकृत भी था, जिससे शिक्षा का प्रसार व्यापक हुआ और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय शिक्षा की प्रतिष्ठा बढ़ी।

1.4 शिक्षा की विशेषताएँ एवं उद्देश्य

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली की प्रमुख विशेषताएँ समग्र विकास, नैतिकता पर बल, अनुशासन, सादगी एवं आध्यात्मिकता थीं। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन न होकर चरित्र निर्माण, आत्मानुशासन एवं समाजोपयोगी जीवन के लिए व्यक्तित्व का विकास करना था। यह प्रणाली व्यक्ति को एक आदर्श नागरिक एवं समाज के उत्तरदायी सदस्य के रूप में तैयार करती थी। हालांकि, इसमें कुछ सीमाएँ भी थीं, जैसे कि शिक्षा का अवसर मुख्यतः उच्च वर्गों तक सीमित था और महिलाओं की शिक्षा अपेक्षाकृत कम विकसित थी, फिर भी इसका योगदान भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान परंपरा के संरक्षण में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है।

2 मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली

2.1 इस्लामी शिक्षा प्रणाली (मदरसा, मकतब)

मध्यकालीन भारत में शिक्षा प्रणाली पर इस्लामी शासन का गहरा प्रभाव पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षा का स्वरूप धार्मिक एवं संस्थागत रूप में विकसित हुआ। इस काल में मकतब प्राथमिक शिक्षा के



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

केंद्र थे, जहाँ बच्चों को कुरान, लेखन-पठन एवं प्रारंभिक गणित की शिक्षा दी जाती थी, जबकि मदरसे उच्च शिक्षा के प्रमुख संस्थान थे, जहाँ धर्मशास्त्र, तर्कशास्त्र, दर्शन, इतिहास, गणित एवं चिकित्सा जैसे विषयों का अध्ययन कराया जाता था। शिक्षा का उद्देश्य मुख्यतः धार्मिक ज्ञान का प्रसार, प्रशासनिक कार्यों के लिए योग्य व्यक्तियों का निर्माण तथा इस्लामी मूल्यों का संरक्षण था।

2.2 फारसी एवं अरबी भाषा का प्रभाव

इस काल में फारसी एवं अरबी भाषाएँ शिक्षा एवं प्रशासन की प्रमुख भाषाएँ बन गईं। विशेष रूप से फारसी भाषा को राजकीय संरक्षण प्राप्त था, जिसके कारण यह शासन, न्याय एवं साहित्य की भाषा बन गई। शिक्षा प्रणाली में इन भाषाओं के माध्यम से ज्ञान प्रदान किया जाता था, जिससे भारतीय शिक्षा प्रणाली में भाषाई परिवर्तन आया। साथ ही, अरबी भाषा के माध्यम से इस्लामी धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन किया जाता था, जिससे धार्मिक शिक्षा को और अधिक महत्व मिला।

2.3 शिक्षा की संरचना एवं सीमाएँ

मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली की संरचना मुख्यतः धार्मिक संस्थानों पर आधारित थी, जिसमें शिक्षा का नियंत्रण शासकों एवं धार्मिक विद्वानों के हाथों में था। शिक्षा का स्वरूप सीमित एवं विशिष्ट वर्ग तक केंद्रित था, जिससे समाज के सभी वर्गों को समान रूप से शिक्षा प्राप्त नहीं हो पाती थी। महिलाओं की शिक्षा भी अत्यंत सीमित थी। इसके अतिरिक्त, शिक्षा में वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक विषयों की अपेक्षा धार्मिक विषयों को अधिक महत्व दिया जाता था, जिससे ज्ञान का व्यापक विकास प्रभावित हुआ। हालांकि, इस काल में साहित्य, वास्तुकला एवं भाषा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देखने को मिलता है, फिर भी समग्र रूप से मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली में व्यापकता एवं समावेशिता का अभाव था, जो इसकी प्रमुख सीमा के रूप में सामने आता है।

3 औपनिवेशिक काल की शिक्षा प्रणाली

3.1 ब्रिटिश शिक्षा नीतियाँ

औपनिवेशिक काल में भारतीय शिक्षा प्रणाली में व्यापक परिवर्तन ब्रिटिश शासन की नीतियों के माध्यम से आए, जिनका उद्देश्य प्रशासनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु एक शिक्षित वर्ग का निर्माण करना था। प्रारंभिक चरण में ईस्ट इंडिया कंपनी ने शिक्षा के प्रति सीमित रुचि दिखाई, परंतु धीरे-धीरे ब्रिटिश सरकार ने शिक्षा को अपने नियंत्रण में लेकर इसे औपचारिक रूप दिया। इस काल में शिक्षा का माध्यम अंग्रेज़ी बनाया गया और पश्चिमी ज्ञान, विज्ञान एवं तर्कप्रधान विचारधारा को प्रोत्साहन मिला, जिससे पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली प्रभावित हुई।

3.2 मैकाले का शिक्षा सिद्धांत (1835)

थॉमस बैबिंगटन मैकाले के 1835 के प्रसिद्ध मिनट ने भारतीय शिक्षा की दिशा को निर्णायक रूप से बदल दिया। मैकाले ने अंग्रेज़ी माध्यम को प्राथमिकता देते हुए भारतीय भाषाओं और पारंपरिक ज्ञान को कम महत्व दिया। उनका उद्देश्य एक ऐसे वर्ग का निर्माण करना था जो "रक्त और रंग से भारतीय, परंतु विचारों



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

और बुद्धि से अंग्रेज़" हो। इस नीति के परिणामस्वरूप अंग्रेज़ी शिक्षा का तीव्र विस्तार हुआ और भारतीय समाज में एक नए शिक्षित मध्यवर्ग का उदय हुआ।

3.3 वुड्स डिस्पैच (1854)

वुड्स डिस्पैच को भारतीय शिक्षा का "मैग्रा कार्टा" कहा जाता है, जिसने शिक्षा के संगठित विकास की नींव रखी। इसके अंतर्गत विश्वविद्यालयों की स्थापना, शिक्षक प्रशिक्षण, प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक एक संरचित व्यवस्था तथा शिक्षा के प्रसार पर बल दिया गया। इसने शिक्षा के क्षेत्र में सरकारी जिम्मेदारी को स्पष्ट किया और आधुनिक शिक्षा प्रणाली के विकास को गति प्रदान की।

3.4 हंटर आयोग एवं सैडलर आयोग

हंटर आयोग (1882) ने प्राथमिक शिक्षा के विस्तार पर जोर दिया, जबकि सैडलर आयोग (1917-19) ने उच्च शिक्षा के सुधार, विशेषकर विश्वविद्यालय शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण सुझाव दिए। इन आयोगों ने शिक्षा प्रणाली में सुधार के प्रयास किए, परंतु उनका प्रभाव सीमित रहा।

3.5 औपनिवेशिक शिक्षा के प्रभाव

औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली के परिणामस्वरूप भारत में आधुनिक शिक्षा, विज्ञान और तर्कशीलता का विकास हुआ, साथ ही एक शिक्षित वर्ग का निर्माण हुआ जिसने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हालांकि, इस प्रणाली ने भारतीय परंपरागत ज्ञान, भाषाओं एवं संस्कृति को कमजोर किया और शिक्षा को रोजगार-उन्मुख तथा शहरी क्षेत्रों तक सीमित कर दिया। इस प्रकार, औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली ने भारतीय समाज पर मिश्रित प्रभाव डाला, जिसमें सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पहलू शामिल हैं।

4 स्वतंत्रता के बाद की शिक्षा प्रणाली

4.1 राष्ट्रीय शिक्षा नीतियाँ (1968, 1986, 2020)

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने अपनी शिक्षा प्रणाली को लोकतांत्रिक, समावेशी एवं राष्ट्रीय विकासोन्मुख बनाने के उद्देश्य से कई महत्वपूर्ण नीतिगत कदम उठाए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 ने समान अवसर, राष्ट्रीय एकता एवं विज्ञान शिक्षा को बढ़ावा देने पर बल दिया। इसके पश्चात राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 (1992 में संशोधित) ने शिक्षा के सार्वभौमिकरण, महिला शिक्षा, अनुसूचित जाति/जनजाति के उत्थान तथा व्यावसायिक शिक्षा को प्रोत्साहित किया। नवीनतम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधार लाते हुए बहुविषयक दृष्टिकोण, कौशल-आधारित अधिगम, डिजिटल शिक्षा, मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा तथा 5+3+3+4 संरचना को लागू करने पर बल दिया।

4.2 सर्व शिक्षा अभियान

सर्व शिक्षा अभियान (SSA) भारत सरकार की एक महत्वपूर्ण पहल रही है, जिसका उद्देश्य 6 से 14 वर्ष के सभी बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराना था। इस कार्यक्रम ने विद्यालयों की संख्या बढ़ाने, शिक्षकों की नियुक्ति, आधारभूत संरचना के विकास तथा नामांकन दर में वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिससे प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक विस्तार हुआ।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

4.3 शिक्षा का सार्वभौमिकरण

स्वतंत्रता के बाद शिक्षा को सभी के लिए सुलभ बनाने पर विशेष ध्यान दिया गया। शिक्षा का अधिकार अधिनियम (RTE, 2009) के माध्यम से 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए शिक्षा को मौलिक अधिकार घोषित किया गया। इससे शिक्षा में समानता, समावेशन एवं सामाजिक न्याय को बढ़ावा मिला तथा वंचित वर्गों तक शिक्षा की पहुँच सुनिश्चित हुई।

4.4 तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा

आधुनिक भारत में तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा का महत्व तेजी से बढ़ा है। इंजीनियरिंग, प्रबंधन, सूचना प्रौद्योगिकी एवं कौशल विकास के क्षेत्र में संस्थानों की स्थापना के माध्यम से रोजगारोन्मुख शिक्षा को प्रोत्साहन दिया गया है। आईटीआई, पॉलिटेक्निक एवं कौशल विकास योजनाओं ने युवाओं को व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें रोजगार के लिए सक्षम बनाया है। इस प्रकार, स्वतंत्रता के बाद की शिक्षा प्रणाली ने समावेशिता, गुणवत्ता एवं कौशल विकास के माध्यम से देश के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

21वीं सदी की शिक्षा प्रणाली

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

21वीं सदी में भारतीय शिक्षा प्रणाली के पुनर्गठन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस नीति ने शिक्षा को लचीला, बहुविषयक एवं समावेशी बनाने पर बल दिया है। 5+3+3+4 की नई संरचना, मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा, समग्र विकास एवं आलोचनात्मक चिंतन को बढ़ावा देना इसके प्रमुख लक्ष्य हैं।

2. डिजिटल शिक्षा एवं ई-लर्निंग

तकनीकी विकास के कारण शिक्षा का स्वरूप तेजी से डिजिटल हो रहा है। ऑनलाइन कक्षाएँ, ई-कंटेंट, वर्चुअल लर्निंग प्लेटफॉर्म एवं मोबाइल ऐप्स के माध्यम से शिक्षा अधिक सुलभ एवं इंटरैक्टिव बनी है, जिससे दूरस्थ क्षेत्रों के विद्यार्थियों को भी समान अवसर प्राप्त हो रहे हैं।

3. स्किल आधारित शिक्षा

वर्तमान समय में शिक्षा को रोजगारोन्मुख बनाने के लिए कौशल-आधारित शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। व्यावसायिक प्रशिक्षण, उद्यमिता एवं तकनीकी दक्षता को बढ़ावा देकर विद्यार्थियों को व्यावहारिक जीवन के लिए तैयार किया जा रहा है।

4. वैश्वीकरण का प्रभाव

वैश्वीकरण ने शिक्षा प्रणाली को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जोड़ दिया है। ज्ञान का वैश्विक आदान-प्रदान, विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग एवं प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण ने शिक्षा की गुणवत्ता एवं मानकों को ऊँचा किया है, जिससे विद्यार्थी वैश्विक अवसरों के लिए सक्षम बन रहे हैं।

तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक विश्लेषण



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

1. प्राचीन vs आधुनिक शिक्षा

प्राचीन शिक्षा प्रणाली मुख्यतः गुरुकुल पर आधारित, मूल्य-केंद्रित एवं समग्र विकास पर केंद्रित थी, जहाँ नैतिकता, आध्यात्मिकता एवं चरित्र निर्माण को प्रमुख स्थान दिया जाता था। इसके विपरीत आधुनिक शिक्षा प्रणाली अधिक संस्थागत, तकनीकी एवं रोजगारोन्मुख है, जिसमें विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं व्यावसायिक दक्षताओं पर विशेष बल दिया जाता है। प्राचीन शिक्षा व्यक्तिगत एवं जीवन-केंद्रित थी, जबकि आधुनिक शिक्षा अधिक औपचारिक एवं परीक्षा-केंद्रित हो गई है।

2. मूल्य-आधारित vs कौशल-आधारित शिक्षा

मूल्य-आधारित शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में नैतिकता, अनुशासन, सहिष्णुता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करना है, जो प्राचीन शिक्षा की प्रमुख विशेषता थी। दूसरी ओर, कौशल-आधारित शिक्षा आधुनिक युग की आवश्यकता है, जो रोजगार, तकनीकी दक्षता एवं व्यावहारिक ज्ञान पर केंद्रित है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में दोनों के बीच संतुलन की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

3. शिक्षा के उद्देश्यों में परिवर्तन

समय के साथ शिक्षा के उद्देश्यों में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ है। प्राचीन काल में शिक्षा का लक्ष्य आत्म-विकास एवं समाज के नैतिक निर्माण पर था, जबकि आधुनिक काल में शिक्षा का उद्देश्य आर्थिक विकास, रोजगार सृजन एवं वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुरूप मानव संसाधन तैयार करना बन गया है।

4. शिक्षा के माध्यम एवं संरचना में बदलाव

प्राचीन शिक्षा में मौखिक परंपरा एवं गुरुकुल आधारित संरचना थी, जबकि आधुनिक शिक्षा में विद्यालय, विश्वविद्यालय एवं डिजिटल प्लेटफॉर्म प्रमुख माध्यम बन गए हैं। शिक्षा का माध्यम संस्कृत एवं क्षेत्रीय भाषाओं से बदलकर अंग्रेज़ी एवं अन्य वैश्विक भाषाओं की ओर स्थानांतरित हो गया है।

5. निरंतरता एवं परिवर्तन का विश्लेषण

भारतीय शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन के साथ-साथ कुछ निरंतरताएँ भी बनी रही हैं, जैसे ज्ञान का महत्व, शिक्षक की भूमिका एवं शिक्षा का सामाजिक प्रभाव। हालांकि, संरचना, उद्देश्य एवं पद्धति में व्यापक परिवर्तन हुए हैं, जो समय की आवश्यकताओं के अनुरूप हैं। अतः यह स्पष्ट होता है कि भारतीय शिक्षा प्रणाली एक गतिशील प्रक्रिया है, जिसमें परंपरा और आधुनिकता का समन्वय आवश्यक है।

निष्कर्ष

भारतीय शिक्षा प्रणाली का ऐतिहासिक विकास एक सतत एवं गतिशील प्रक्रिया को दर्शाता है, जो समय के साथ सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिवर्तनों से प्रभावित होती रही है। प्राचीन काल में जहाँ शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के नैतिक, आध्यात्मिक एवं समग्र विकास पर केंद्रित था, वहीं मध्यकाल में यह धार्मिक प्रभावों के अधीन होकर सीमित स्वरूप में विकसित हुई। औपनिवेशिक काल में शिक्षा प्रणाली ने एक निर्णायक मोड़ लिया, जहाँ पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव से आधुनिक शिक्षा की नींव पड़ी, लेकिन इसके साथ ही भारतीय परंपरागत ज्ञान एवं भाषाओं को भी हानि पहुँची। स्वतंत्रता के बाद भारत ने



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

शिक्षा को समावेशी, लोकतांत्रिक एवं सार्वभौमिक बनाने के उद्देश्य से अनेक सुधारात्मक कदम उठाए, जिनमें विभिन्न शिक्षा नीतियाँ एवं कार्यक्रम महत्वपूर्ण रहे। 21वीं सदी में शिक्षा प्रणाली तकनीकी विकास, डिजिटल अधिगम एवं कौशल-आधारित दृष्टिकोण की ओर अग्रसर है, जिससे शिक्षा अधिक सुलभ, लचीली एवं व्यावहारिक बनती जा रही है। इस समग्र विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि भारतीय शिक्षा प्रणाली ने विभिन्न चरणों में अनेक परिवर्तन एवं सुधारों का अनुभव किया है, जिसमें परंपरा एवं आधुनिकता का मिश्रण देखने को मिलता है। अतः भविष्य की शिक्षा नीतियों में यह आवश्यक है कि प्राचीन मूल्यों एवं आधुनिक आवश्यकताओं के बीच संतुलन स्थापित किया जाए, जिससे शिक्षा प्रणाली न केवल ज्ञान प्रदान करने वाली, बल्कि एक समग्र एवं उत्तरदायी समाज के निर्माण में सहायक बन सके।

संदर्भ

1. आल्टबैक, पी. जी., एवं साल्मी, जे. (2018). *शैक्षणिक उत्कृष्टता की ओर: विश्व-स्तरीय अनुसंधान विश्वविद्यालयों का निर्माण*. विश्व बैंक प्रकाशन।
2. बत्रा, पी. (2015). शिक्षकों की आवाज़ और एजेंसी: राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 की एक अनुपस्थित कड़ी. *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली*, 50(1), 33-39।
3. भारत सरकार. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. मानव संसाधन विकास मंत्रालय।
4. गुप्ता, ए. (2017). भारत में शिक्षा: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और वर्तमान चुनौतियाँ. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल डेवलपमेंट*, 55, 1-10।
5. जयराम, एन. (2016). भारत में उच्च शिक्षा: व्यापकता और परिवर्तन. *इंडियन जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी*, 77(3), 389-415।
6. कुमार, के. (2016). *शिक्षा का राजनीतिक एजेंडा: औपनिवेशिक और राष्ट्रवादी विचारों का अध्ययन*. सेज प्रकाशन।
7. मिश्रा, एस., एवं रंजन, आर. (2018). भारत में डिजिटल शिक्षा: चुनौतियाँ और अवसर. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इनोवेटिव रिसर्च इन एजुकेशन*, 5(2), 45-52।
8. नाम्बिस्सन, जी. बी. (2017). शिक्षा में समानता? भारत में दलित बच्चों की स्कूली शिक्षा. *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली*, 52(45), 42-50।
9. एनसीईआरटी. (2016). *शांति शिक्षा पर स्थिति पत्र*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद।
10. ओईसीडी. (2021). *भारत में शिक्षा: नीतिगत परिप्रेक्ष्य*. ओईसीडी प्रकाशन।
11. रानी, पी. जी. (2017). भारत में तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा: मुद्दे और चुनौतियाँ. *जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड वर्क*, 30(2), 123-135।
12. शर्मा, आर. सी. (2019). भारतीय शिक्षा प्रणाली: चुनौतियाँ और सुधार. *यूनिवर्सिटी न्यूज़*, 57(12), 15-22।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

13. सिंह, ए. (2018). वैश्वीकरण और भारतीय शिक्षा प्रणाली पर उसका प्रभाव. *जर्नल ऑफ एजुकेशन पॉलिसी*, 33(4), 567–582।
14. तिलक, जे. बी. जी. (2015). भारत में उच्च शिक्षा कितनी समावेशी है? *सोशल चेंज*, 45(2), 185–223।
15. वर्गीज़, एन. वी. (2016). भारतीय उच्च शिक्षा में शासन सुधार. *एजुकेशनल मैनेजमेंट एडमिनिस्ट्रेशन एंड लीडरशिप*, 44(2), 247–264।